वर्ण विचार एवं उच्चारण स्थान

स्वर

इस अध्याय में हम वर्ण विचार के बारे में चर्चा करेगें। वर्ण क्या हैं, इसके कितने भेद हैं आदि।

वर्ण

मुख से निकलने वाली वह छोटी-से-छोटी इकाई जिसके टुकड़े न किए जा सकें **अक्षर** कहलाती है।

"न क्षरन्ति इति अक्षर:"

जिसका क्षरण (नष्ट) न हो सके वह है अक्षर। तथा इसके लिखित रुप को वर्ण कहते हैं।

जैसे: अ, इ, आ, ई, उ, ऊ, क, ख, आदि।

वर्ण को हम तीन प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं।

1. स्वर

2. व्यञ्जन

3. अयोगवाह

संस्कृत में 13 स्वर, 33 व्यञ्जन तथा 3 अयोगवाह होते हैं।

स्वर

ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण स्वतंत्र रुप से किया जा सके, स्वर कहलाते हैं।

जैसे: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ

आप सभी स्वरों का उच्चारण करेगें तो महसूस करेगें कि स्वर को (उच्चारण के आधार पर) तीन रुपों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

स्वरों के भेद

1. ह्रस्व

2. दीर्घ

3. प्लुत

1. ह्रस्व स्वर

वे स्वर जिनके उच्चारण में **एक मात्रा** का समय लगता है, ह्रस्व स्वर कहलाते हैं।

जैसे: अ, इ, उ, ऋ, ऌ

हो सकता है '**मात्रा**' शब्द से आपका परिचय न हो।

मात्रा – वर्णों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं। अथवा, स्वरों के प्रतीक को भी मात्रा कहते हैं।

2. दीर्घ स्वर

वे स्वर जिनके उच्चारण में **दो मात्रा** का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं।

जैसे: आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

आप ह्रस्व तथा दीर्घ स्वरों को खुद बोलकर भी इनके बीच का अन्तर समझ पाएंगे।

3. प्लुत स्वर

वे स्वर जिनके उच्चारण में **तीन मात्रा** का समय लगे, प्लुत स्वर कहलाते हैं।

जैसे: ओउम्

प्लुत स्वर को 'ऊँ' से चिन्हित किया जाता है।

स्वर

ह्रस्व - अ, इ, उ, ऋ, ऌ = 5

दीर्घ - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ = 8

व्यञ्जन

वे वर्ण जो स्वरों की सहायता से उच्चारित किए जाते हैं, व्यञ्जन कहलाते हैं। आप स्वयं भी पाएंगे कि बिना स्वरों की सहायता से व्यञ्जनों को नहीं बोला जा सकता।

जैसे: क, ख, ग, च, छ, आदि।

क् + अ = क

ख् + अ = ख

व्यञ्जन को उच्चारण के आधार पर तीन रुपों में वर्गीकृत किया गया हैं।

1. स्पर्श व्यञ्जन

2. अंत:स्थ व्यञ्जन

3. ऊष्म व्यञ्जन

1. स्पर्श व्यञ्जन

वे व्यञ्जन जिनके उच्चारण में मुख के अन्दर जिह्वा, तालु, मूर्धा, दन्त आदि का स्पर्श होता है, स्पर्श व्यञ्जन कहलाते हैं।

इनका वर्गीकरण निम्न है -

'क' वर्ग – अर्थात 'क' के अन्दर आने वाले 'व्यञ्जन'

क वर्ग – क्, ख्, ग्, घ्, ङ	= 5	
च वर्ग – च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	= 5	
ट वर्ग – ट्, ठ, ड्, ढ्, ण्	= 5	25
त वर्ग – त्, थ्, द्, ध् , न्	= 5	
प वर्ग – प्, फ्, ब्, भ्, म्	= 5	

2. अंत:स्थ व्यञ्जन

वे व्यञ्जन जिनमें स्वरों का आभास होता है, अंत:स्थ व्यञ्जन कहलाते हैं।

जैसे: य, र्, ल्, व्

3. ऊष्म व्यञ्जन

वे व्यञ्जन जिनके उच्चारण के साथ ऊष्मा निकलती है, ऊष्म व्यञ्जन कहलाते हैं।

जैसे: श, ष्, स् ह्

अयोगवाह

वे वर्ण जो स्वर तथा व्यञ्जन के साथ प्रयुक्त होते हैं, अयोगवाह कहलाते हैं। ये वर्ण अनुस्वार और विसर्ग के रुप में भी जाने जाते हैं।

1. अनुस्वार

नाक से उच्चारित होने वाले वर्ण अनुस्वार कहलाते हैं।

इसका चिंह ं होता है।

जैसे: पंखा, गंगा, पंख, शंख

यदि आप 'पंखा' बोलेंगें तो महसूस करेंगे कि ध्वनि मात्र नाक से ही निकल रही है।

2. अनुनासिक

वे वर्ण जिनके उच्चारण में नाक एवं मुख दोनों का प्रयोग होता है, अनुनासिक कहलाते हैं।

इसका चिन्ह ँ (चन्द्र बिँदु) होता है।

जैसे: चाँद, माँद, हँसना आदि।

आप 'चाँद' बोलेंगें तो महसूस करेंगे कि इस शब्द को बोलने में नाक तथा मुख दोनों का प्रयोग हो रहा है।

3. विसर्ग

स्वर वर्णों के साथ उनके बाद में लगने वाले चिन्ह विसर्ग कहलाते हैं।

इसका चिन्ह (:) होता है, तथा ये 'ह' की ध्वनि निकालते हैं।

जैसे: राम: रामह्

बालक: बालकह्

उपरोक्त वर्णों के अतिरिक्त संस्कृत भाषा में संयुक्त व्यञ्जनों का अधिक प्रचलन है।

जैसे:

क्ष -	क् + ष् + अ	= क्षत्रिय
त्र -	त् + र् + अ	= नेत्र
श्र -	श् + र् + अ	= श्रेय
ज्ञ -	ज + ञ्	= ज्ञान
द्य -	द् + य् + अ	= विद्या
ह्ल -	ह् + ल् + अ	= आह्लाद
द्व -	द् + व् + अ	= विद्वान
ह्व -	ह् + व् + अ	= आह्वान
द्ध -	द् + ध् + अ	= युद्ध

वर्ण विच्छेद तथा वर्ण संयोजन

वर्ण विच्छेद

वर्णों को पृथक-पृथक करना वर्ण विच्छेद कहलाता है।

यदि आप उच्चारण के अनुरुप स्वर एवं व्यञ्जन को पृथक करेगें तो यह और भी सरल हो जाएगा।

राम:		र् + आ + म् + अ:।
बालक:		ब् + आ + ल् + अ + क:।
मनुष्य		म् + अ + न् + उ + ष् + य् + अ।
मनोहर		म् + अ + न + ओ + ह् + अ + र् + अ।
संयोजन		विच्छेद

वर्ण संयोजन

पृथक-पृथक वर्णों को जोड़ना वर्ण संयोजन कहलाता है।

उच्चारण स्थान

उच्चारण - वर्णों को बोलना

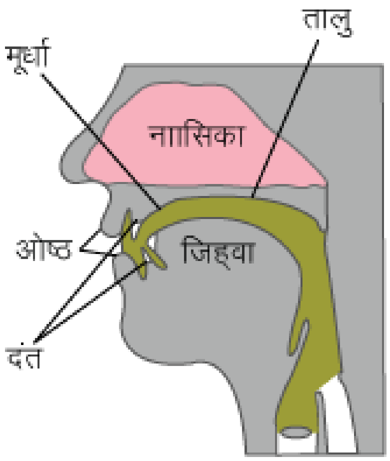

स्थान - शरीर का वह अंग जो कोई विशिष्ट स्वर/व्यञ्जन बोलने में मदद करे उसे उच्चारण स्थान कहते हैं।

नासिका, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ, जिह्वा आदि उच्चारण स्थान हैं। अर्थात कण्ठ से निकलने वाली श्वास या वायु इन अंगों की सहायता से ध्वनि में परिवर्तित हो जाती है।

कंठ

कंठ से उच्चारित होने वाले वर्णों को कंठव्य कहते हैं।

स्वर - अ, आ

व्यञ्जन - क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह् (विसर्ग)

यदि आप 'क', 'ख' आदि बोलेंगे तो महसूस करेंगे कि ध्वनि आपके कंठ से निकल रही है।

तालु

तालु से उच्चारित होने वाले वर्णों को तालव्य कहते है।

स्वर - इ, ई

व्यञ्जन - च्, छ्, ज्, झ, य्, श्

इन वर्णों का उच्चारण करते समय आप पाएंगे कि वायु तालु पर टकराकर ध्वनि उत्पन्न कर रही है।

मूर्धा

मूर्धा से उच्चारित होने वाले वर्णों को मूर्धन्य कहते हैं।

स्वर - ऋ, ॠ

व्यञ्जन - ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष् आदि

'ट' आदि वर्णों को बोलें तो आप महसूस कर सकते हैं कि इनका उच्चारण मूर्धा की सहायता से हो रहा है।

दन्त

दाँत से उच्चारित (या टकराकर ध्वनि पैदा करने वाले) होने वाले वर्णों को दन्त्य कहते हैं।

स्वर - ऌ

व्यञ्जन - त, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्

आप 'ऌ' एवं 'त' जैसे वर्ण किसी ऐसे बुजुर्ग से बोलने को कहें जिनके दाँत न हों तो आप समझेंगे कि इन वर्णों के उच्चारण में दाँतों का किस प्रकार प्रयोग होता है।

ओष्ठ

ओंठ से उच्चारित होने वाले वर्णों को ओष्ठ्य कहते हैं।

स्वर - उ, ऊ

व्यञ्जन - प्, फ्, ब्, भ्, म्

अगर आप इन वर्णों का उच्चारण ओंठ खोलकर करें तो शायद इनकी जगह आप के मुँह से कुछ और हीं निकलेगा। आप महसूस करेंगे कि ओंठ के बिना इनका उच्चारण संभव नहीं है।

नासिका

नासिका से उच्चारित होने वाले वर्णों को नासिक्य कहते हैं।

व्यञ्जन - ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।

आप इन वर्णों को एक बार नाक बंद करके बोलें तथा दूसरी बार नाक को सामान्य स्थिति में रख कर बोलें। आप महसूस करेंगे कि इन वर्णों को नाक की सहायता से ही बोला जाता है।

इनके अतिरिक्त कुछ वर्ण ऐसे हैं जिनका उच्चारण करने के लिए एक से अधिक अंगों की सहायता लेनी पड़ती है।

कंठतालु

वे वर्ण जिनके उच्चारण में कंठ तथा तालु दोनों प्रयुक्त होते हैं, कंठतालव्य कहलाते हैं।

स्वर - ए, ऐ

इन वर्णों का उच्चारण करते समय आप पाएंगें कि कंठ एवं तालु दोनों की सहायता से ही इनका उच्चारण हो रहा है। (अ+इ) = ए

कंठोष्ठ

वे वर्ण जिनके उच्चारण में कंठ तथा ओष्ठ दोनों प्रयुक्त होते हैं, कंठोष्ठ्य कहलाते हैं।

स्वर - ओ, औ

इन वर्णों का उच्चारण करते समय आप महसूस करेंगे कि कंठ तथा ओंठ दोनों का प्रयोग हो रहा है। (अ+उ) = ओ

दंतोष्ठ

वे वर्ण जिनके उच्चारण में दंत तथा ओष्ठ दोनों प्रयुक्त होते हैं, दंतोष्ठ कहलाते हैं।

व्यञ्जन - व्

इस वर्ण का उच्चारण करने पर आप महसूस करेंगें कि दाँत तथा ओंठ दोनों की सहायता ली जा रही है।